ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-I, August-2014
ISSN No. 2349-9435
Periodic Research

बलिया जनपद के ग्रामीण अंचल में समेकित बाल विकास सेवा परियोजना केन्द्रों पर पूरक आहार की उपलब्धता एंव गुणवत्ता का अध्ययन

राजमती वर्मा
प्रवक्ता,
गृह विज्ञान संकाय,
उदासीनाचार्य जगतगुरू श्रीचन्द जी महाविद्यालय, पिलाखिनी,
गौराबादशाहपुर, जौनपुर (उ0प्र0)

वीनू नागर
एसोसियेट प्रोफेसर,
गृह विज्ञान संकाय,
एन.के.बी.एम.जी.पी.जी.कालेज
चन्दौसी, मुरादाबाद (उ0 प्र0)

सारांश

मानव को जीवित, स्वस्थ्य एवं चिरआयु रहने के लिए उचित और पौष्टिक भोजन (आहार) अतिआवश्यक होता है परन्तु भारतीय आबादी में 13.1 प्रतिशत (0–6 आयु समूह के 15 करोड़ 90 लाख) निवास करने वाले बच्चों में से लगभग आधी संख्या में बच्चे अपर्याप्त पोषण के शिकार हैं। इन्हे उचित पोषक पूरक आहार प्रदान करने हेतु ICDS जैसी एजेन्सियाँ आविर्भाव में आयी। लगभग 30 वर्ष से अधिक समय व्यतीत होने के बाद भी इस आबादी का लगभग 15 प्रतिशत हिस्सा आज भी इन सुविधाओं से वंचित है। प्रस्तुत अध्ययन इन्ही पूर्व– विद्यालयीय बच्चों (3–6 वर्ष) के पूरक आहार पर केन्द्रित है जो उत्तर प्रदेश के बलिया जनपद में स्थित ICDS केन्द्रों पर पूरक आहार की उपलब्धता एवं गुणवत्ता से सम्बन्धित है जिसका परिणाम सकारात्मक प्राप्त हुआ है।

मुख्य शब्दः स्वास्थ्य,उपलब्धता एवं गुणवत्ता,पोषण,जनसंख्या

प्रस्तावना

हितोपदेशक में सत्य ही कहा गया है कि '' आहार निद्राभयमैथुनञ्च, समानमेतत् पशुमिर्नराणाम।'' अर्थात, आहार, निद्रा, भय, मैथुन ये सभी प्राणियों में समान होते है, परन्तु मानव अपने आहार, वातावरण एवं परिस्थिति के अनुसार अन्य प्राणियों से भिन्न होता है। उपर्युक्त सभी कारकों का केन्द्र बिन्दु आहार को माना जा सकता है क्योंकि जिस तरह का आहार हम ग्रहण करेगें उसी तरह का विचार, स्वास्थ्य, बल, बुद्धि, विद्या, भाव– संवेग, भय, क्रोध, निद्रा एंव मैथुन इत्यादि की उत्पत्ति होती है, इसीलिये पोषक आहार पर सर्वाधिक बल दिया गया है। उत्तम स्वास्थ्य के लिए दैनिक आहार में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा विटामिन, खनिज लवण, रेसे, शुद्ध वायु एंव जल तथा उचित वातावरण का होना आवश्यक है। जन्म के समय एक या दो पौण्ड भार का नन्हा सा शिशु देखते ही देखते बड़ा होने लगता है, शरीर का विकास करने लगता है, लंबाई, उँचाई और भार बढ़ते रहते हैं, चेहरे पर कांति उभरती रहती है और व्यक्तित्व में सम्मोहन बढ़ता चला जाता है। इन सबके पीछे सही मात्रा में उचित भोज्य सामग्री का ही महत्वपूर्ण स्थान है।

अध्ययन की आवश्यकता

1 अरब 22 करोड़ जैसे विशाल आबादी धारण करने वाला भारत देश स्वास्थ्य के क्षेत्र में पिछड़ा रहा है क्योंकि संतुलित आहार भारत में आज भी मील का पत्थर बना हुआ है। वैसे तो व्यंजनो में 32 भोजन और 33 तरकारियाँ मानी गयी हैं, लेकिन भारतीय थाली में इतना सब होना सम्भव नही है। पोषण सम्बन्धी तत्वों/तथ्यों की अज्ञानता एंव माताओं द्वारा बच्चों मे संतोषजनक पोषण प्रदान न करने के कारण बच्चे विकार ग्रस्त हो जाते हैं।हैक्सटोन महोदय ने उल्लेख किया है कि ''विकासशील देशों के निर्धन परिवारों में कुपोषण बहुत अधिकता से पाया जाता है जिसके फलस्वरूप बच्चे पर्याप्त ऊर्जा ग्रहण नही कर पाते हैं।''

भारतीय जनसंख्या में 13.1 प्रतिशत (2011 में 18 करोड़ 90 लाख) हिस्सा रखने वाले 0–6 आयु समूह के बच्चों को पर्याप्त पोषण प्रदान करने हेतु 2 अक्टूबर 1975 को ''बच्चे ही भावी युवा एंव परिवार, समाज एंव राष्ट्र के कर्णधार होते है।'' के नारे के साथ भारत में समेकित बाल विकास परियोजना (ICDS) का शुभारम्भ किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य अति संवेदनशील एंव दूरस्थ क्षेत्रों में 6 वर्ष से कम आयु के कमजोर बच्चों तक शिक्षा, स्वास्थ्य एंव पोषण सम्बन्धी समन्वित कार्यक्रम का प्रसार कर उनके जीवन स्तर को ऊँचा उठाना है। परन्तु 30 वर्ष से अधिक समय व्यतीत होने के बाद भी **NFHS-3** ने अपने सर्वेक्षण में चिन्ताजनक तस्वीर पेश की है, जो बच्चों की दुर्बलता अथवा कद के

अनुपात में भार में कमी है।इसके अनुसार 19 प्रतिशत बच्चे दुर्बल हैं(जो सात वर्ष पहले कराये गये सर्वेक्षण में 16 प्रतिशत तक था) इसी में यह भी पाया गया कि 6 से 35 महीने की आयु में शिशुओं में रक्त की कमी,पानी,अनीमिया क मामले बढ़कर 79 प्रतिशत पर पहुँच गया है (जो **NFHS.2** में 74 प्रतिशत बच्चों और गर्भवती महिलाओं में 50–58 प्रतिशत पाये गये हैं।)

उपरोक्त तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में इस विचार का उद्भव हुआ कि महिलाओं एंव बच्चों के जीवन स्तर को सुधारने तथा उन्हे पर्याप्त पोषण प्रदान करने हेतु सरकार द्वारा विभिन्न प्रयास किये जा रहे हैं। खासतौर पर ICDS विश्व के सबसे बृहद भारतीय जनकल्याणकारी योजना होने के बाद भी शिशुओं एंव बालको की मृत्युदर में कमी एंव पोषण–स्तर में सुधार क्यों नही हो पा रहा है? गर्भवती माताओं द्वारा अविकसित तथा कम भार के बच्चों को जन्म दिया जाना, अनीमियां से पीड़ित होना, धातृ माताओं को अनीमिया तथा पीलिया से पीड़ित होना इत्यादि बातों ने वर्तमान अध्ययन हेतु प्रेरित किया।

तकनीकी शब्दों का स्पष्टीकरण

तकनीकी शब्दों का स्पष्टीकरण निम्नवत् है

ग्रामीण अंचल

ग्रामीण अंचल खुला परिवेशयुक्त वह स्थान है जहाँ भूमि का अत्यधिक प्रयोग होता है, कम जनसंख्या घनत्व, साक्षरता दर में कमी तथा सरल जीवन यापन के तरीके विद्यमान रहते हैं। प्रायः यह शहरी क्षेत्र से भिन्न है।

समेकित बाल विकास सेवा

2अक्टूबर 1975 को प्रारम्भ की वह जनकल्याणकारी योजना जो स्कूल पूर्व बच्चों एंव उनकी माताओं को जीवित रहने की दर को बढ़ाने एंव उनकी पौष्टिक भोजन एंव सीखने के अवसर प्रदान करने वाली एक महत्वाकांक्षी योजना है जिसे केन्द्र पर समन्वित रूप में उपलब्ध कराना है। इसकी समस्त सेवायें आँगनबाड़ी नामक केन्द्र पर उपलब्ध करायी जाती है।

पूरक आहार

एक प्रकार का वह उत्पाद जो पोषण–स्तर को बढ़ाने के लिए पोषक तत्वों–विटामिन, खनिज, प्रोटीन, शाक, प्राकृतिक पूरक खाद्य जो भोजन का स्थान ग्रहण कर सके।

अध्ययन उद्देश्य

1. समेकित बाल विकास परियोजना केन्द्रों पर पूरक आहार (3–6 आयु वर्ग हेतु) की उपलब्धता का अध्ययन करना।
2. समेकित बाल विकास परियोजना केन्द्रों पर पूरक आहार (3–6 आयु वर्ग हेतु) की गुणवत्ता का अध्ययन करना।

परिसीमायें

प्रत्येक अध्ययन का निर्धारित क्षेत्र होता है जो निम्नवत् है–

1. प्रस्तुत अध्ययन बलिया जनपद के ग्रामीण अंचलों तक ही सीमित है।
2. अध्ययन में बलिया जनपद के केवल एक ही सामुदायिक विकास खण्ड (CDB) सीयर तक सीमित है।
3. यह अध्ययन प्ब्वै कार्यकर्त्रियों तक ही सीमित है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है जो एक ही समय में तुलनात्मक रूप से एक बड़ी संख्या से प्रदत्त संकलन किया जाता है, इसमें व्यक्ति की विशेषताओं पर ध्यान नही दिया जाता है।जनसंख्या के रूप में सन् 2008– 2009 में ICDS केन्द्रों पर कार्यरत आँगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों को सम्मिलित किया गया है।न्यायदर्शन हेतु 'उद्देश्यानुसार प्रतिचयन' तकनीक का प्रयोग 204 कार्यकर्त्रियों के चयन हेतु किया गया।

चरों का स्पष्टीकरण

अध्ययन में चर निम्नवत् है

स्वतंत्र चर

ICDS केन्द्रों पर प्राप्त पूरक आहार को स्वतंत्र चर के रूप में लिया गया है।

आश्रित चर

पूरक आहार की उपलब्धता एंव गुणवत्ता को आश्रित चर के रूप में लिया गया है।

वाह्य चर

प्रयोगिक स्थिति में स्वतंत्र चर के अतिरिक्त कुछ वाह्य कारक भी आश्रित चर को प्रभावित करतें हैं–

1. समय
2. व्यक्तिगत परेशानी
3. ICDS का वातावरण
4. सहयोग की स्थिति
5. मनः स्थिति

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ा संग्रह हेतु 'गुणात्मक आँकड़ा उपकरण' (Qualitative Data Tools) का उपयोग किया गया है। इसमें प्रदत्तों का माध्य (Mean) नही निकाला जा सकता है, केवल प्रतिशत के रूप में परिणाम प्राप्त होते हैं।

उपकरणों का निर्माण द्विस्तरीय प्रारूप (Try-Out and Validation) के तहत किया गया है।पूरक आहार उपलब्धता' प्रश्नावली में 26 तथा 'पूरक आहार गुणवत्ता' प्रश्नावली में 25 प्रश्न अन्तिम रूप से चयनित हुये।

निर्धारिका में सम्मिलित पद

तालिका संख्या 01

पूरक आहार उपलब्धता निर्धारिका में प्रयुक्त पदों का विवरण

क्रम सं0	क्षेत्र का नाम	पदों की संख्या	पदों का क्रम
01	धनराशि से सम्बन्धित	4	1, 2, 14, 15
02	खाद्य– सामग्री की उपलब्धता	16	3,4,5,6,7,8, 9,10,11,12,13, 16,17,22,23,24
03	ईधन की आपूर्ति	4	18,19, 20, 21
04	बच्चोंकीउपस्थिति	2	25, 26

ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-III, ISSUE-I, August-2014
ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

पूरक आहार गुणवत्ता निर्धारिका में प्रयुक्त पदों का विवरण

क्रम सं0	क्षेत्र का नाम	पदों की संख्या	पदों का क्रम
01	सुरक्षा से सम्बन्धित	5	1,2,3,4,14
02	खाद्य– सामग्री की गुणवत्ता	10	5,6,7,12,13, 17,21,23,24, 25
03	साफ– सफाई	6	8,9,10,11,15, 16
04	ईधन एंव पर्यावरण	4	18,19,20,23

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

प्रदत्तों का विश्लेषण निम्न सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया है

%=n x100/N : = प्रतिशत n = अपेक्षित संख्या

N = प्राप्ताकों की संख्या

परिणाम एंव विश्लेषण

प्रथम उद्देश्य–

'समेकित बाल विकास परियोजना केन्द्रों पर उपलब्ध आहार (3–6 वर्ष) की उपलब्धता का अध्ययन' हेतु पूरक आहार उपलब्धता निर्धारिका के पदों पर ICDS कार्यकर्त्रियों द्वारा किये गये मतों के आधार पर, मत प्रतिशत ज्ञात कर व्याख्या निम्नवत् प्रस्तुत है–

तालिका संख्या 2

पूरक आहार उपलब्धता निरीक्षण तालिका

प0 सं0	पद	हाँ		नहीं		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	आपके केन्द्र पर गरम पूरक आहार प्रदान करने हेतु निर्धारित धनराशि समय से उपलब्ध हो पाती है?	184	90.2	20	9.8	204	100

प0 सं0	पद	संख्या	प्रतिशत
2	यदि नहीं तो निम्न में से क्या कारण हो सकते हैं?		
(क)	शासन/प्रशासनिक इच्छाशक्ति का अभाव	9	45
(ख)	यातायात के साधन सम्बन्धी कठिनाइयाँ	2	10
(ग)	स्थानीय स्तर पर वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए तत्परता का अभाव	7	35
(घ)	कमीशन खोरी	2	10
योग		20	100

प0 सं0	पद	हाँ		नहीं		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
3.	आपके केन्द्र पर पर्याप्त मात्रा में, बच्चों हेतु रेसिपि (भोजन बनाने की विधि) के अनुसार, खाद्य–पदार्थ समय से उपलब्ध हो पाता है?	183	89.7	21	10.3	204	100

प0 सं0	पद	संख्या	प्रतिशत
4	यदि नहीं तो निम्न में से क्या कारण हो सकते हैं?		
(क)	स्थानीय स्तर पर सहयोग का अभाव	8	38
(ख)	भोज्य पदार्थ की कालाबाजारी	5	24
(ग)	बाजार का नजदीक न होना	5	24
(घ)	शासन/प्रशासन द्वारा समय से उपलब्ध न होना	3	14
योग		21	100
5	खाद्य–सामग्री क्रय की जाती है?		
(क)	साप्ताहिक	119	58.3
(ख)	15 दिन पर	64	31.4
(ग)	माह में एक ही बार	16	7.8
(घ)	प्रतिदिन	5	2.5
योग		204	100

प0 सं0	पद	हाँ		नहीं		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
6.	कच्चे खाद्य–सामग्री के क्रय हेतु मातृ –समिति का उचित सहयोग मिल	113	55.4	91	44.6	204	100

	पाता है?						
7.	वर्तमान मानक के अनुरूप सामान्यतः 3–6 वर्ष के बच्चों को 80 ग्राम पका–पकाया भोजन प्रति छात्र, प्रतिदिन दे पाती हैं?	165	80.9	39	19.1	204	100
8.	अति कुपोषित 3–6 वर्ष के बच्चों को 160 ग्राम प्रति छात्र, प्रतिदिन गरम पूरक–आहार उपलब्ध हो पाता है?	163	79.9	41	20.1	204	100
9.	खिचड़ी हेतु उपयुक्त सहायक सामग्री (दाल, चावल, तेल, नमक इत्यादि) सहजता से उपलब्ध हो पाते है?	202	99.0	02	1.0	204	100
10.	दलिया हेतु उपयुक्त सहायक सामग्री (दलिया, चीनी, नमक, तेल इत्यादि) समय से उपलब्ध हो जाते हैं?	203	99.5	01	0.5	204	100
11.	आयोडाइज्ड नमक बच्चोंकोदे पाती हैं?	199	97.5	05	2.5	204	100
12.	मेनू के अनुसार, निश्चित दिनों के क्रम में खिचड़ी, दलिया और स्थानीय मौसमी भोज्य पदार्थ बच्चों को मिल पाता है?	177	86.8	27	13.2	204	100
13.	स्थानीय उपलब्ध फल/सब्जी तथा अन्य सहायक सामग्री (सत्तू, चूरा, पोहा आदि) को मिश्रित करते हुए, सप्ताह में एक दिन (शनिवार) को बच्चों को दिया जाता है?	32	15.7	172	84.3	204	100
14.	वर्तमान में रू0 2/ 2.70 में प्रति बच्चा, प्रतिदिन मानक के अनुरूप खाद्य–सामग्री उपलब्ध हो पाती है?	142	69.6	62	30.4	204	100
15.	खाद्य–सामग्री की महंगाई का प्रभाव, बच्चों के पूरक आहार की उपलब्धता पर पड़ता है?	199	97.5	05	2.5	204	100
16.	पूर्व–विद्यालयीय बच्चों के लिए स्वच्छ जल, पीने हेतु उपलब्ध हो पाता है?	190	93.1	14	6.9	204	100
17.	क्या अलग से आँगनबाड़ी कक्ष उपलब्ध है?	136	66.7	68	33.3	204	100
18.	क्या ईंधन की आपूर्ति बराबर सुनिश्चित रह पाती है?	180	88.2	24	11.8	204	100
19.	परम्परागत ईंधन (लकड़ी, गोबर के उपले, कोयला, तेल एवं गैस इत्यादि) सरलता से उपलब्ध हो जाता है?	158	77.5	46	22.5	204	100
20.	विद्यालय/समुदाय द्वारा परम्परागत ईंधन के स्थान पर वैकल्पिक ईंधन (गोबर गैस, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा इत्यादि) के प्रति प्रोत्साहन दिया जाता है?	02	1.0	202	99.0	204	100

प0 सं0	पद	संख्या	प्रतिशत
21.	गरम पूरक आहार को तैयार करने में, किस पदार्थ का अधिकतम प्रयोग किया जाता है?		
(क)	केरोसिन	0	0
(ख)	जलावन लकड़ी	202	99.0

(ग)	स्च्ळ गैस	0	0
(घ)	अन्य	02	1.0
योग		204	100

प0 सं0	पद	हाँ		नहीं		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
22.	पुष्टाहार तैयार करने में प्रयुक्त होने वाले बर्तनों/ईंधन आदि के लिए ग्राम पंचायतों/ऐच्छिक संस्थाओं/समुदाय/व्यक्ति से वित्तीय या अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता है?	44	21.6	160	78.4	204	100
23.	क्या बच्चों को बैठने हेतु पर्याप्त मात्रा में दरी, फर्नीचर आदि उपलब्ध है?	102	50	102	50	204	100
24.	बच्चों में पूरक आहार से होने वाले लाभ को ज्ञात करने हेतु, आपके केन्द्र पर पर्याप्त उपकरण/ यंत्र उपलब्ध है?	77	37.7	127	62.3	204	100
25.	क्या बच्चे आँगनबाड़ी केन्द्र पर पूरे समय रहते हैं?	179	87.7	25	12.3	204	100

प0 सं0	पद	संख्या	प्रतिशत
26	आपके आँगनबाड़ी केन्द्र पर बच्चों की उपस्थिति लगभग कितने प्रतिशत रहती है?		
(क)	90ः से अधिक	30	14.7
(ख)	75 से 90ः के मध्य	68	33.3
(ग)	60 से 75ः के मध्य	69	33.8
(घ)	60ः से कम	37	18.2
योग		204	100

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि पूरक आहार हेतु धनराशि की समय से उपलब्धता (1), शासन/प्रशासनिक इच्छाशक्ति का अभाव (2), रेसिपि के अनुसार खाद्य– पदार्थ की उपलब्धता (3), स्थानीय स्तर पर सहयोग का अभाव (4), खाद्यान्न सामग्री का क्रय (5), मातृ– समिति का सहयोग (6), मानक के अनुरूप हॉट कुक्ड (7), अति कुपोषित को हॉट कुक्ड (8), खिचड़ी/दलिया हेतु सहायक सामग्री की समय से उपलब्धता (9,10), आयोडाइज्ड नमक (11), दिनों के क्रम में खाद्य– पदार्थ (12), आवंटित धनराशि में खाद्य– सामग्री की उपलब्धता (14), मंहगाई का प्रभाव (15), स्वच्छ जल की उपलब्धता (16), आँगनबाड़ी कक्ष की उपलब्धता (17), ईधन की आपूर्ति (18), परम्परागत ईधन की उपलब्धता (19), जलावन लकड़ी (21) एंव बच्चों की उपस्थिति 60–75 प्रतिशत (25,26) के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है।

जबकि स्थानीय उपलब्ध फल/सब्जी/अन्य सहायक सामग्री की उपलब्धता (13), वैकल्पिक ईधन को प्रोत्साहन (20), स्थानीय सहयोग (22) एंव पूरक आहार के लाभ हेतु माप उपकरण (24) पदो के प्रति नकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है। केवल फर्नीचर की उपलब्धता (23) पर समान प्रतिक्रिया व्यक्त किया गया है।

उपरोक्त पदो के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि समेकित बाल विकास परियोजना (ICDS) केन्द्रों पर पूरक आहार उपलब्ध हो जाता है।

द्वितीय उद्देश्य

''समेकित बाल विकास परियोजना केन्द्रों पर उपलब्ध आहार (3–6 वर्ष) की गुणवत्ता का अध्ययन''हेतु निम्न तालिका का निर्माण कर विश्लेषण किया गया है–

तालिका संख्या 3

पूरक आहार गुणवत्ता निरीक्षण तालिका

प0 सं0	पद	हाँ		नहीं		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत

1.	बच्चों के पूरक आहार की सुरक्षा हेतु, आपकोकोई दिशा–निर्देश/जानकारी/प्रशिक्षण दिया गया है?	152	74.5	52	25.5	204	100
2.	आप अपने स्तर से खाद्य–सामग्री सुरक्षित रख पाती है?	199	97.5	05	2.5	204	100
3.	क्या खाद्य–सामग्री रखने हेतु आपके ICDS केन्द्रों पर पर्याप्त जगह उपलब्ध है?	178	87.33	26	12.7	204	100
4.	खाद्य–सामग्री (ठोस एवं तरल) रखने हेतु पर्याप्त डिब्बे/कन्टेनर मिल पाते हैं?	5	2.5	199	97.5	204	100
5.	गुणवत्तायुक्त (शुद्ध) गेहूँ, गुड़, चीनी, चावल, दाल, नमक, तेल आदि मिल पाता है?	200	98.0	04	2.0	204	100
6.	क्या खाद्य–सामग्री को सुरक्षित रखने एवं स्वादिष्ट बनाये रखने हेतु उपाय अपनाये जाते हैं?	177	86.8	27	13.2	204	100

प0 सं0	पद	संख्या	प्रतिशत
7.	यदि नहीं, तो निम्न में से क्या कारण हो सकते हैं?		
(क)	धुलने एवं सुखाने की सुविधा का अभाव	2	7.4
(ख)	दवाईयों, कीटनाशकों एवं अन्य रसायनों का अभाव	11	40.7
(ग)	प्रशासन से इस दिशा में सहायता का अभाव	12	44.5
(घ)	अन्य कारण	2	7.4
योग		27	100

प0 सं0	पद	हाँ		नहीं		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
8.	दाई को साफ–सफाई की पर्याप्त जानकारी है?	201	98.5	03	1.5	204	100
9.	बच्चों को स्वयं के साफ–सफाई की पर्याप्त जानकारी दी जाती है?	203	99.5	01	0.5	204	100
10.	भोजन के पूर्व बच्चों के हाथ धुलवाना, लाइन में बैठाना, भोजन के बाद बर्तन व केन्द्र की सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाता है?	184	90.2	20	9.8	204	100

प0 सं0	पद	संख्या	प्रतिशत
11.	यदि नहीं, तो निम्न में से क्या कारण हो सकते हैं?		
(क)	पानी एवं जगह का अभाव	2	10
(ख)	सफाई का अभाव	4	20
(ग)	धुलने की उचित सामग्री (साबुन, राख इत्यादि) का अभाव	12	60
(घ)	अन्य कारण	2	10
योग		20	100

प0 सं0	पद	हाँ		नहीं		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
12.	नमक में आयोडीन की मात्रा मापने हेतु सम्बन्धित किट उपलब्ध/प्रयोग करती हैं?	38	18.6	166	81.4	204	100

13.	क्या उपलब्ध कराये जा रहे रेसिपि/हॉट फूड को बच्चे रूचिपूर्वक खाते हैं?	201	98.5	03	1.5	204	100
14.	खाद्य–सामग्री की सुरक्षा जीव–जन्तुओं, कीड़े–मकोड़ों, नमी–सीड़न, फफूँद इत्यादि से ठीक से हो पाती है?	139	68.1	65	31.9	204	100
15.	पीने के लिए स्वच्छ जल की उपलब्धता सुनिश्चित रह पाती है?	196	96.1	08	3.9	204	100
16.	क्या आँगनबाड़ी केन्द्र पर शौचालय/मूत्रालय उपलब्ध है?	34	16.7	170	83.3	204	100
17.	खाद्य–सामग्री अच्छी तरह पकाने के लिए पर्याप्त मात्रा में बर्तन उपलब्ध है?	178	87.3	26	12.7	204	100
18.	खाद्य–सामग्री अच्छी तरह पकाने हेतु पर्याप्त ईंधन की आपूर्ति हो पाती है?	182	89.2	22	10.8	204	100
19.	पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए उन्नत चूल्हों का उपयोग हो पाता है?	6	2.9	198	97.1	204	100
20.	अग्नि से दुर्घटना के बचाव हेतु उपकरण उपलब्ध है?	4	2.0	200	98.0	204	100
21.	मातृ–समिति गुणवत्तायुक्त भोज्य पदार्थ क्रय करने में मदद करती है?	97	47.5	107	52.5	204	100

प0 सं0	पद	संख्या	प्रतिशत
22	खाद्य–सामग्री के क्रय हेतु यदि मातृ–समिति का सहयोग नहीं मिल पाता है तो निम्न में से क्या कारण हो सकते हैं?		
(क)	मातृ–समिति की रूचि का अभाव	42	39
(ख)	सुलभ यातायात व्यवस्था का अभाव	5	5
(ग)	कमीशन की मांग	9	8
(घ)	आपस में सामंजस्य की कमी	51	48
योग		107	100

प0 सं0	पद	हाँ		नहीं		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
23.	आँगनबाड़ी केन्द्र हेतु उचित आकार–प्रकार, वायु, प्रकाशयुक्त एवं सीड़नमुक्त कक्ष उपलब्ध है?	135	66.2	69	33.8	204	100
24.	बच्चों में पूरक आहार से होने वाले लाभ को ज्ञात करने हेतु माप, तौल इत्यादि उपकरणों/यंत्रों का प्रयोग करती हैं?	109	53.4	95	46.6	204	100
25.	गरम पूरक आहार की गुणवत्ता जाँचने हेतु समय–समय पर आकस्मिक (Random) निरीक्षण होता रहता है?	104	50.98	100	49.0	204	100

तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि पूरक आहार की सुरक्षा हेतु प्रशिक्षण (1), अपने स्तर से सुरक्षा (2), पर्याप्त स्थान (3), गुणवत्तायुक्त सामग्री की उपलब्धता (5), स्वादिष्ट बनाने के उपाय (6), नहीं की स्थिति में प्रशासनिक सहायता का आभाव (7), दाई को साफ– सफाई का ज्ञान (8), बच्चों को ज्ञान (9), भोजन पूर्व सफाई पर ध्यान (10), यदि नहीं तो उचित सामग्री का अभाव (11), हॉट फूड में बच्चों की रूचि (13), खाद्य– सामग्री की सुरक्षा (14), पीने की स्वच्छ जल की उपलब्धता (15), पकाने हेतु बर्तन (17), ईधन की निरन्तर आपूर्ति (18), उचित आकार– प्रकार के कक्ष (23), पूरक आहार से लाभ के मापन हेतु उपकरणों का प्रयोग (24) एंव आकास्मिक निरीक्षण (25) के प्रति सकारात्मक मत ICDS कार्यकर्त्रियों द्वारा प्रदान किया गया है।

जबकि खाद्य– सामग्री हेतु डिब्बे/कन्टेनर की उपलब्धता (4), आयोडीन मापन हेतु सम्बन्धित किट (12), ICDS पर शौचालय (16), उन्नत चूल्हों का उपयोग (19), अग्नि निरोधक उपकरण (20), गुणवत्ता हेतु भोज्य सामग्री के क्रय में मातृ– समिति का सहयोग (21) तथा नही की स्थिति में आपस में सामंजस्य की कमी (22) सम्बन्धित पदों पर नकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त किया है।

उपरोक्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि समेकित बाल विकास परियोजना (ICDS) केन्द्रों पर पूरक आहार की गुणवत्ता बनी हुई है।

निष्कर्ष एवं अध्ययन का निहितार्थ

अध्ययन के परिणाम से स्पष्ट होता है कि अधिकांश आँगनबाड़ी केन्द्रों पर गुणवत्तायुक्त आहार रेसिपि एंव मीनू के अनुसार मानक के अनुरूप उपलब्ध हो जाता है। इससे सरकारी तथा गैर– सरकारी एजेन्सियों को नई दिशा प्राप्त हो सकेगी, साथ ही ICDS परियोजना से जुड़े कार्यकर्त्रियाँ अपने निस्पादन स्तर में सुधार करने को प्रेरित हो सकेगें, ICDS कार्यकर्त्रियाँ वर्तमान धनराशि रू0 2/2.70 प्रति बच्चा, प्रतिदिन में खाद्य– सामग्री को क्रय कर लेती है परन्तु बच्चों को आयु के अनुरूप पर्याप्त मात्रा में गुणवत्तायुक्त आहार उपलब्ध करानें में असमर्थ होती हैं। अधिकांश केन्द्रों पर अलग से ICDS भवन, शौचालय तथा डिब्बे एवं कन्टेनर की अनुपलब्धता का भी खाद्य– सामग्री की गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अधिकांश केन्द्रों पर परम्परागत ईधन को उपयोग में लाने से जैसे– तैसे खाद्य– सामग्री तो पक जाती है परन्तु राख एवं धुंए से खाद्य– सामग्री प्रभावित होती है। इसके लिए गैर– परम्परागत वैकल्पिक ईधन के साधनों पर बल दिये जाने की आवश्यकता है। समय– समय पर सभी ICDS केन्द्रों के आकस्मिक निरीक्षण को और प्रभावशाली बनाने से पूरक आहार की उपलब्धता एवं गुणवत्ता को कुछ हद तक बनाये रखा जा सकता है। बच्चों के स्वास्थ्य पर होने वाले प्रभाव को ज्ञात करने हेतु पर्याप्त Anthropometry उपकरण उपलब्ध कराये जाने चाहिए जिससे बच्चों को शारीरिक आवश्यकता के अनुरूप खाद्य– सामग्री की मात्रा घटायी या बढ़ायी जा सके। मातृ– समितियों को पुनर्संगठित एवं प्रभावी बनाने की आवश्यकता है जिससे वे इस योजना में रूचि लेकर पारदर्शितापूर्वक कार्य संपादित करने में सहयोग प्रदान कर सके।खाद्य– सामग्री की कालाबाजारी रोककर, बच्चों की संख्या के अनुपात में पोषाहार उपलब्ध कराकर तथा उसे स्वादिष्ट एवं गुणवत्ता को बनाये रखकर बच्चों की पलायन दर को रोका जा सकता है एवं ICDS के प्रति अभिभावकों के विश्वास को बनाये रखा जा सकता है। व्यक्ति/समुदाय/ग्राम पंचायतों/ ऐच्छिक संस्थाओं को भी जागरूक करने की आवश्यकता है जो 'बच्चे ही भावी युवा एवं समाज के कर्णधार होते हैं' को सार्थक किया जा सके।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1- हितोपदेश– स्त्रोत, डॉ0 शिव बालक द्विवेदी, ग्रन्थम, मेस्टन रोड, कानपुर पृ0 44.
2- योजना, जुलाई 2011, 538, योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली 110001.
3- National Family Health Survey (NFHS-3) 2005-2006 Indian National report, chapter 10-Nutrition and Anemia (Sources- Jassica Jacobs, 27 May,2011, P.1-7),
4- Ramachandran, P., Poverty nutrition linkages; Review Article, Indian J. Med. Res. 126, October 2007.
5- ICDS III, बढ़ता बचपन, बाल विकास पुष्टाहार निदेशालय, महिला एवं बाल विकास लखनऊ उ0प्र0, 2006.
6- व्यास हरिश्चन्द्र एवं व्यास कैलाश चन्द्र (2004), परिवार और पर्यावरण, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली 110005 पृ0 155– 120.
7- Haxton (1987). Sources by Kashyap P., 'Varanasi Janpad ke Kucch gramin anchal main poorve-kacchiya bacchon (1-5 year) aahar main Kalorie ki matra sambandhi adhayan tatha kucch sujhav, Ph.D. Thesis B.H.U., 1992.
8- Singh, Anita & Vinita, "Height and Weight profil of Pre-school children in varanasi district. "Indian Journal of community psychology. 2009. 5 (1).
9- Singh, A.K. (2013) Research Methods in Psychology, Sociology and Education, Motilal Banarasidas, 41, U.A. Banglo Road, Jawahar Nagar- Delhi.